सामाजिक संस्था सम्पूर्णा
समग्र विकास की ओर अग्रसर
गैर सरकारी संगठन

"आलेख"

"स्वयं सिद्धा बनी संपूर्णा"

डॉ. शोभा विजेंद्र
संस्थापिका अध्यक्षा

कोरोना के संकट काल में जब पूरी दिल्ली त्राहि–त्राहि कर रही थी और कुछ इस प्रकार का एहसास हो रहा था कि जैसे मानों सब कुछ समाप्त होने वाला है ऐसे में संपूर्णा स्वयं सिद्धा बन कर उभरी।

आप सब जानते ही हैं कि पिछले 27 वर्षों से संपूर्णा आप सबके बीच में कार्य कर रही है और हमेशा से ही आप सबका सहयोग और आशीर्वाद संपूर्णा को प्राप्त हुआ है। मैं यह तो नहीं कहूंगी कि संपूर्णा निर्बाध रूप से इन 27 सालों में निरंतर चलती आई है। मैंने कई बार अपने आलेखों में बताया है कि संपूर्णा की यात्रा भी कंटक भरी थी। संपूर्णा ने भी हर चेतन वस्तु की तरह सदैव ही संघर्षों के बीच से अपना रास्ता खोजा।

दिल्ली में मोदी सरकार के हस्तक्षेप के बाद कोरोना संक्रमितो की संख्या में थोड़ा सा पॉजिटिव अंतर आया है। अब कुछ केस कम हो रहे हैं। इसलिए आज मन भी थोड़ा प्रफुल्लित है। हम सब ने देखा है कि केंद्रीय गृहमंत्री परम आदरणीय श्री अमित शाह जी की सिंह गर्जना के बाद दिल्ली के निवासियों में एक उम्मीद जगी है। और अब कोरोना पीडितों को इलाज की हर सुविधा भी मिली है। जिसके लिए हम उनका हृदयतल की गहराइयों से धन्यवाद करते हैं।

आज आपको बताते हुए बड़ा ही हर्ष हो रहा है कि लगातार संपूर्णा द्वारा बनाए गए मास्क पूरी दिल्ली भर में पसंद किए जा रहे हैं। इन मास्क की जो सबसे बड़ी खासियत है वह यह है कि इसको संपूर्णा की स्वयं सहायता समूह की बहनों द्वारा बहुत प्रेम से बनाया जा रहा है। ये मास्क बहुत ही उपयोगी होने के साथ–साथ आप इन मास्क को कई बार धोकर प्रयोग में ला

सकते हैं। भयानक गर्मी और उमस में मास्क को पहनने के बाद कभी घबराहट नहीं होती है। इसका कपड़ा बहुत ही नरम है।

मैं आपसे प्रतिभा श्रीवास्तव का संपूर्णा का साथ और विश्वास साँझा कर रही हूँ उसने मुझे बताया कि लॉकडाउन के बाद जब घर से बाहर काम पर जाने के सभी रास्ते बंद हो गए थे। तब उस समय संपूर्णा ने ना केवल सिलाई मशीन मुझे दी। बल्कि प्रतिमाह 4 से 5 हजार रूपए का मास्क बनाने का काम भी दिया। आज इसकी वजह से ही मेरे घर का गुजारा चल रहा है।

कोरोना के समय में बस यही परीक्षा का समय है। जब हर व्यक्ति परेशान, मायूस और घबराया हुआ नजर आ रहा था। लेकिन उनकी हालत बहुत ही बुरी है जो प्रतिदिन कमाते खाते हैं। ऐसे में वे बहने जो घरों में झाड़ू, पोंछा, बर्तन आदि मांजकर अपने परिवार का गुजारा चलाती हैं, की भी हालत कोई अच्छी नहीं है। ऐसे में संपूर्णा ने मास्क बनाने के छोटे से प्रकल्प को चालू कर ऐसी अनेकों महिलाओं के जीवन मे आर्थिक परेशानियों को थोड़ा सा कम करने का प्रयास किया है।

मेरे पास शब्द नहीं है संपूर्णा के उन रणबांकुरे के लिए विशेषकर बहनों के लिए जिन्होंने इस आपदा काल में अपने परिवार की चिंता किए बिना संपूर्णा के प्रांगण में आकर बहनों को मास्क बनाने का प्रशिक्षण दिया और जिनको सिलाई मशीन की आवश्यकता थी, उनको सिलाई मशीन दी और उनको महीने भर में 4 से 5 हजार रूपए कमाने के लायक बनाया।

——————————————